kAlabhairavAShTakaM

श्रीकालभैरवाष्टकम्

Document Information

Text title : kaalabhairavaaShTakaM 1

File name : kaalabhairava.itx

Category : aShTaka, shiva, shankarAchArya

Location : doc_shiva

Author : Shankaracharya

Transliterated by : Narayanaswami Pallasena at swami at math.mun.ca

Proofread by : Narayanaswami Pallasena, Sunder Hattangadi

Latest update : August 10, 2002, June 20, 2020

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 18, 2023

sanskritdocuments.org

kAlabhairavAShTakaM

श्रीकालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनांघ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगंबरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ १॥

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमंबुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ २॥

शूलटंकपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ३॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् । var स्थिरम्
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं var निक्वणन्
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ४॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं var नाशनं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभितांगमण्डलं var केशपाश, निर्मलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ५॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षदं var भूषणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ६॥

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसंततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ७॥

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् । var काशिवासि
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥ ८॥

॥ फल श्रुति ॥

कालभैरवाष्टकं पठंति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं var लोभदैन्य
प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं नरा ध्रुवम् ॥

var ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं ध्रुवम् ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य
श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Encoded by Narayanaswami Pallasena at swami@math.mun.ca
Proofread by Narayanaswami Pallasena and Sunder Hattangadi

kAlabhairavAShTakaM
pdf was typeset on December 18, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*